भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक

महामोग्गल्लान

(ऋद्धिमानों में 'अग्र')

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक

महामोग्गल्लान

(ऋद्धिमानों में 'अग्र')

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्‌घोषणा

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं इद्धिमन्तानं यदिदं महामोग्गल्लानो।"

"भिक्षुओ! मेरे ऋद्धिमान भिक्षु-श्रावकों में अग्र (श्रेष्ठतम) है 'महामोग्गल्लान'।"

–अङ्गुत्तरनिकाय १.१.१९०

अग्रश्रावकों के लिए तथागत की अनुशंसा

भिक्षुओ! सारिपुत्त और मोग्गल्लान की संगत करो।
वे सब्रह्मचारियों पर अनुग्रह करने वाले हैं।

.....

सारिपुत्त जननी के समान हैं।
मोग्गल्लान जन्मे हुए के पोषक के समान हैं।

.....

सारिपुत्त स्रोतापत्ति फल में शिक्षित करते हैं।
मोग्गल्लान निर्वाण में शिक्षित करते हैं।

.....

भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक

महामोग्गल्लान

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [ix]

अमृत की खोज

जन्म तथा नामकरण १
धर्मचक्षु खुले १
प्रव्रज्या ५
राजपथ ७

निजी साधना के प्रसंग

तंद्रा का उत्पात ९
नौ ध्यानों का अवगाहन १२
आर्यमौन १४
साधना में सातत्य १४
आस्रवों से मुक्त कराने वाली प्रतिपदा १६
'ब्राह्मण' का 'साधना' से मेल. १७

ऋद्धिमानों में अग्र

महामोग्गल्लान की पहचान १८
कुमार सीलव की रक्षा १९
परिषद का शुद्धिकरण २०
मिथ्या-दृष्टि का उन्मूलन २२
नन्दोपनन्द-दमन २४

शिक्षा के प्रति निष्ठावान

ऋद्धि-प्रदर्शन नहीं २६
सालवन का आत्यंतिक वर्णन २७
सतिपट्ठानों की भावना २७
संक्षेप में तृष्णा के क्षय द्वारा मुक्ति २८

बेजोड़ बोज्झङ्ग ३१

कुछ धार्मिक प्रसंग

क्या क्या अव्याकृत है? ३२
कर्म-विपाक ३३
वेश्या का उद्धार. ३५
महाश्रावक की मांग. ३६
हल्ले-गुल्ले का शमन ३७
अनासक्ति-योग ३९

देवलोक के प्रसंग

त्रिरत्न में श्रद्धा से सद्गति ४३
देवताओं का संबोधि-लाभ ज्ञान ४४
सुमन का फल ४६
पुण्यवान का अभिनंदन. ४८

पापेच्छ

मार को फटकार. ५०
दुष्ट का संग नहीं ५०
विकट क्रोध का दुष्परिणाम ५१
गो-हत्या का दुष्फल. ५२
चाहे जैसे नाम तो हुआ! ५४
संघ में फूट ५६
कोकालिक - प्रकरण ५८

गुणों की खान

ऐसे कहते भगवान ६०
अग्रश्रावकों की परस्पर स्तुति ६०
सिर पर यक्ष का प्रहार. ६२
पांच प्रकार के शास्ता ६३
निष्कासन पर भी समताभाव ६५
आयुष्मान वङ्गीस की संस्तुति ६७

विविध प्रसंग

अनुकरणीय आदर्श ६८
गृहस्वामी की मुक्ति ६८
अग्गिदत्त का कल्याण ६९

परिनिर्वाण-लाभ

भव-संसरण से मुक्ति ७१
भविष्यवाणी का प्रतिफल ७५
बुद्ध को कोई शोक नहीं ७५
देहधातु ७६

परिशिष्ट ७७
आयुष्मान महामोग्गल्लान की कतिपय गाथाएं . . ७७

प्रकाशकीय

थेरगाथा की अट्ठकथा में भगवान बुद्ध के अस्सी 'महाश्रावकों' के नाम गिनाये गये हैं जो वर्णानुक्रम से निम्न प्रकार से हैं –

अङ्गुलिमाल, अजित, अञ्ञासिकोण्डञ्ञ, अनुरुद्ध, अस्सजि, आनन्द, उदय, उपवान, उपसिव, उपसेन, उपालि, उरुवेलकस्सप, कङ्खारेवत, कप्प, काळुदायी, किमिल, कुण्डधान, कुमारकस्सप, खदिरवनियरेवत, गयाकस्सप, गवम्पति, चूळपन्थक, जतुकण्णि, तिस्समेत्तेय्य, तोदेय्य, दब्ब, दारुचीरिय, धोतक, नदीकस्सप, नन्द (१), नन्द (२), नन्दक, नागित, नालक, पिङ्गिय, पिण्डोलभारद्वाज, पिलिन्दवच्छ, पुण्णक, पुण्णजि, पुण्ण मन्ताणिपुत्त, पुण्ण सुनापरन्तक, पोसाल, बाकुल, भगु, भद्दिय (१), भद्दिय (२), भद्रावुध, महाउदायी, महाकच्चायन, महाकप्पिन, महाकस्सप, महाकोट्ठिक, महाचुन्द, महानाम, महापन्थक, महामोग्गल्लान, मेघिय, मेत्तगू, मोघराजा, यस, यसोज, रट्ठपाल, राध, राहुल, लकुण्डकभद्दिय, वक्कलि, वङ्गीस, वप्प, विमल, सभिय, सागत, सारिपुत्त, सीवलि, सुबाहु, सुभूति, सेल, सोण कुटिकण्ण, सोण कोळिवीस, सोभित, हेमक।

इनमें अग्रश्रावक 'महामोग्गल्लान' का नाम भी है। इस पुस्तिका में इन अग्रश्रावक का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत प्रस्तुत किया जा रहा है।

संक्षिप्त जीवनी

- महामोग्गल्लान राजगह के निकट कोलित ग्राम में उसी दिन पैदा हुए थे जिस दिन महाश्रावक सारिपुत्त। ये दोनों ही भगवान बुद्ध से कुछ बड़ी उम्र के थे।